दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के नाम
खुला सन्देश

प्रिय अरविन्द,

परोक्ष रूप से तो नहीं अपरोक्ष रूप में मेरा तुम्हारे साथ परिचय है। मनीष सिसौदिया से तो मिला हूँ। योगेन्द्र यादव के साथ सम्पूर्ण क्रांति मंच हरियाणा के कार्यक्रम में मंच भी साझा किया था। आपकी फरूख़ाबाद की रैली और आम आदमी पार्टी के स्थापना समारोह में 26 नवम्बर, 2012 को जन्तर–मन्तर पर भी उपस्थित था। तुम्हारे मित्र डा. रणसिंह आर्य के साथ बिजनौर में बहुत सालों से एक ही परिसर में रह रहा हूँ। इस तरह तुम से दूर होते हुए भी काफ़ी क़रीब हूँ।

इस पत्र के लिखने का कारण है आपके शपथ ग्रहण समारोह के बाद आपका निम्नलिखित कथन **''आम आदमी पार्टी दूसरी पार्टियों का घमंड तोड़ने के लिए बनी है। मैं अपने विधायकों और मंत्रियों से हाथ जोड़ कर विनती करना चाहूंगा कि वे ऐसा कोई काम नहीं करें, जिससे कि एक और पार्टी को हमारा घमंड तोड़ने के लिए पैदा होना पड़े।''**

आपके अब तक के सभी क्रियाकलापों से पता चलता है कि ;मेरी समझ के मुताबिक योगेन्द्र यादव को छोड़कर आपके सभी सहयोगी घमंड से ग्रसित हैं। अपने आप को ईमानदार और दूसरे को बेईमान कहना क्या घमंड नहीं है। ''अब चलेगा झाड़ू'' क्या यह भी अहंकार नहीं? महाभारत का युद्ध पांडवों ने नहीं श्री कृष्ण ने जीता था लेकिन पांडवों को घमंड हो गया था। उनका क्या हश्र हुआ? आपके गुरु अन्ना हज़ारे यह कहते थकते नहीं थे कि मैंने कई विकेट गिरा दिये। मेरे पास तो खाने के लिए एक प्लेट है और एक बिस्तर। मैं इतना त्यागी हूँ कि अपने भतीजे–भतीजियों के नाम तक नहीं जानता। जो अन्ना 6 करोड़ भारतियों को उद्वेलित कर देश में क्रान्ति लाना चाहते थे, कितने साईड लाईन हो गये। आपने दूसरी पार्टियों का घमंड तो क्या तोड़ा आपने तो अपने गुरु अन्ना हज़ारे का घमंड भी तोड़ दिया। अन्ना एक ऐसे लोकपाल बिल से सन्तुष्ट हो गये, जिसे आपकी भाषा में जोकपाल बिल कहा गया और आपने कहा कि पारित लोकपाल बिल से तो एक चूहा भी जेल में नहीं जा पायेगा। मुझे लगता है कि तिहाड़ जेल से रामलीला ग्राउण्ड तक के जुलूस में जो भीड़ उमड़ी थी उससे अन्ना हज़ारे को घमंड हो गया था।

ख़ैर, अब अपनी बात रखता हूँ– यह देश विश्व का महानतम देश है। इस देश की धरती को महान ऋषियों, मुनियों, संतों और अवतारों की चरण रज प्राप्त है, जिससे यह पृथ्वी का भूखण्ड पावन हो गया है। इस धरती पर वेदों का उच्चारण हुआ। ऋषियों ने उपनिषद रचे। रत्नाकर नाम के डाकू ने महर्षि वाल्मीकि बन रामायण रची। इस धरती की महानता है कि एक डाकू महर्षि बन सकता है। इसी धरती पर श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश भी दिया। इसी धरती पर मध्यकालीन युग में अकाल पुरुष द्वारा भेजे गये गुरु नानक, कबीर, रविदास जी, नामदेव जी, शेख़ फरीद जैसे अनेक अवतारी पुरुष पैदा हुए। इसके अलावा अनेक क्रान्तिकारियों और शहीदों ने इस धरती को अपने खून से सींचा है। यह धरती पावन ही नहीं पूज्य है।

इस पावन धरती पर जन्मा व्यक्ति आम आदमी नहीं है। आप इस धरती पर पैदा हुए हिन्दुस्तानियों को, जन जनार्दन को, आम आदमी कहकर उनका अपमान कर रहे है। हम अभी श्री रामकृष्ण परमहंस के परम शिष्य स्वामी विवेकानन्द की सार्द्ध शती समारोह का समापन करने जा रहे हैं। 12 जनवरी 1863 को उस महान भारतीय का इस धरती पर जन्म हुआ था। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं उसी धरती पर पैदा हुआ, जहां स्वामी विवेकानन्द जैसे महान पुरुष पैदा हुए। 15 साल विदेश में रहा और स्वामी विवेकानन्द जी के इस कथन को कभी नहीं भूला ''मैं हर उस व्यक्ति को ग़द्दार कहता हूँ, जिसने दूसरे भारतियों की उपेक्षा कर शिक्षा पाई और वह इस देश के लाखों करोड़ों ग़रीबों और अशिक्षित लोगों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता।'' मुझे गर्व है कि मैंने कनाडा की नागरिकता ग्रहण नहीं की और भारत लौट कर स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा अपनी कमर पर लगाये गये ग़द्दारी के ठप्पे को हटाने का प्रयास किया।

यह पत्र आपकी 'आम आदमी पार्टी' का विकल्प खड़ा करने का संकेत मात्र है। बाक़ी जो प्रभु भविष्य में मेरे शरीर से करवायेंगे उसकी मुझे कोई जानकारी नहीं। यह सब प्रभु की लीला है। गुरु ग्रन्थ साहिब में शहीदों के सरताज श्री गुरु अर्जन देव जी महाराज द्वारा रचित एक शब्द की पंक्ति है ''तुझ बिन दूजा अवर न कोई, सभ तेरा खेल अखाड़ा जीयो।''

गीता के 13वें अध्याय के 27वें श्लोक पर आधारित स्वामी विवेकानन्द जी का कथन है। **"Every soul is potentially divine"** लेकिन प्रत्येक व्यक्ति शैतान, हैवान, इन्सान या भगवान किसी को भी अभिव्यक्त कर सकता है। इस देश के लोगों द्वारा क्या अभिव्यक्त किया जा रहा है इसको देखते हुए भी हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वरीय सत्ता से ही कार्य कर पाता है।

बात कुछ लम्बी हो गयी। उपरोक्त कुछ बातें दिमाग़ से और कुछ बातें दिल से कही हैं। दिल की गहराई से आपको छोटा भाई समझ कर एक बात कह रहा हूँ। बुरे व्यक्ति में भी भगवान को देखने का प्रयास करोगे तो जीवनमुक्त हो जाओगे और क्या पता कोई रत्नाकर फिर महर्षि वाल्मीकि बन जाये।

गर्व से कहो – हम हिन्दोस्तानी हैं।

सस्नेह
तुम्हारा सहदेशवासी
अर्जुन सिंह समदर्शी
ग्राम–गोविन्दपुर, पो.–खारी
ज़िला–बिजनौर ;उ.प्र.